सत्यमेव जयते
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

नवजात देखभाल

एसएचजी बैठकों के लिए फेसिलिटेटर गाइड

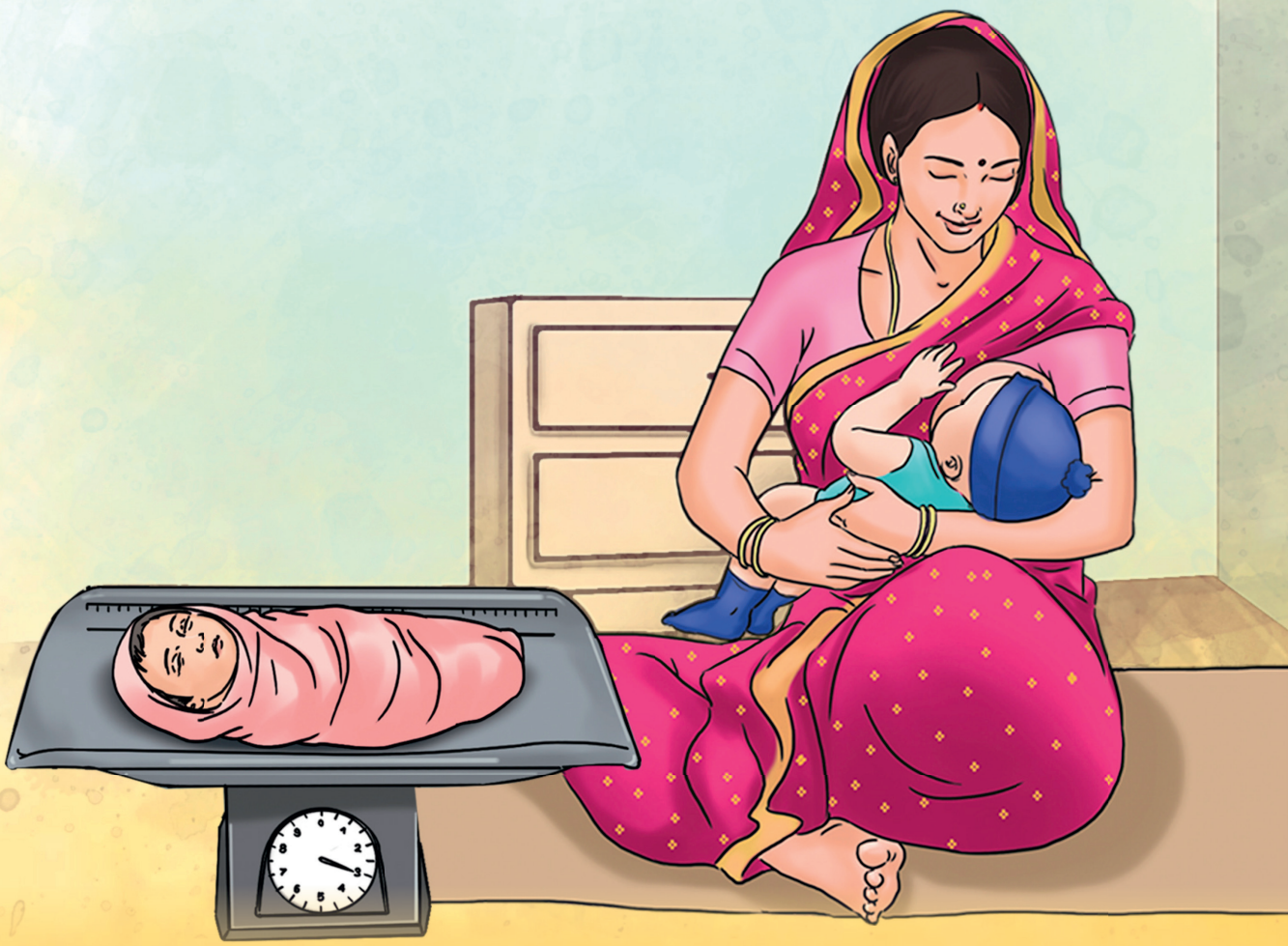

दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्राम आजीविका मिशन (डी ऐ वाई -एनआरएलएम)

ग्राम विकास मंत्रालय, भारत सरकार

प्रिय फेसिलिटेटर

नवजात देखभाल पर यह फेसिलिटेटर गाइड, फ्लिपबुक को प्रचारित करने और एसएचजी समूहों और अन्य सामुदायिक कैडर के बीच प्रमुख संदेशों को प्रसारित करने में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम) के अंतर्गत सभी फेसिलिटेटर की मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह सत्र खाद्य, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता (एफएनएचडब्ल्यू) पर एक प्रशिक्षण पैकेज का हिस्सा है जिसमें फ्लिप बुक, फैसिलिटेटर गाइड, पोस्टर, परामर्श कार्ड और स्टिकर एवं अन्य सामग्री शामिल हैं।

नवजात देखभाल पर इस प्रशिक्षण का उद्देश्य एसआरएलएम के कर्मचारियों, कैडर और समुदाय को बड़े पैमाने पर ज्ञान, अभ्यास और उचित व्यवहार के साथ सशक्त बनाना है ताकि नवजात की देखभाल में सुधार किया जा सके। यह ज्ञान स्वस्थ बच्चों को पालने और बेहतर व्यवहार और प्रथाओं को अपनाने में मदद कर सकता है। हम सभी जानते हैं कि बेहतर स्वास्थ्य और पोषण के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि होती है जिससे गरीबी में कमी आती है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि यह प्रशिक्षण पैकेज, हालांकि एसएचजी महिलाओं के लिए है, लेकिन इसे पूरे परिवार के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में काम करना चाहिए। फ्लिपबुक के माध्यम से प्रत्येक सत्र के अंतर्गत प्रदान की गई जानकारी और इस गाइड को परिवार के लिए सामूहिक शिक्षा के रूप में देखा जाना चाहिए, और परिवार के प्रत्येक सदस्य को यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए कि संदेश रोजमर्रा की जिंदगी में उनके द्वारा अपनाए गए हैं।

इन व्यवहारों को आत्मसात करने की जिम्मेदारी केवल महिलाओं की ही नहीं होती है; परिवार में पुरुषों/पति/बड़े लड़कों को एफएनएचडब्ल्यू पर इन प्रथाओं का पालन करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसकी व्यवस्था सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

इस मॉडयूल का उद्देश्य फैसिलिटेटर को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना है:

- नवजात शिशु देखभाल प्रथाओं के महत्व और प्रमुख तैयारियों पर व्याख्या।
- कम वजन वाले नवजात शिशुओं की देखभाल किस तरह से की जाए और बच्चे को कैसे गर्म रखा जाए।
- शिशुओं एवं बच्चों के लिए टीकाकरण सारणी।

सत्र का प्रारंभ

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि इस सत्र में आप प्रतिभागियों को नकारात्मक सांस्कृतिक वर्जनाओं और मिथकों को कायम रखने की अनुमति न दें। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सुनिश्चित करें कि प्रतिभागी सही मायने में नवजात शिशु की उचित देखभाल की आवश्यकता और महत्व को समझें और साथ ही कमजोर या कम वजन वाले नवजात शिशु की देखभाल के लिए याद रखने वाले बिंदुओं को भी समझें।

चरण 1:

प्रतिभागियों से यह पूछकर समूह के साथ चर्चा शुरू करें कि नवजात शिशुओं की देखभाल कैसे की जानी चाहिए और किन प्रथाओं का पालन किया जाना चाहिए इस बारे में वे कैसे सोचते हैं । उन्हें

केस स्टडी

20 वर्षीय महिला अखिला अपनी गर्भावस्था के दौरान कमजोर बनी रही और अब अपने बच्चे को जन्म देने के लिए स्वास्थ्य केंद्र में है। उसने 1.8 किलो वजन के बच्चे को जन्म दिया। उसकी सास उसके साथ थी और बच्चे के जन्म के तुरंत बाद, उसने नवजात को पिलाने के लिए गुड़ का पानी दिया। वहां मौजूद नर्स ने उसे रोकने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मानी। डॉक्टर को बुलाना पड़ा और डॉक्टर के समझाने के बाद ही कि नवजात का वजन कम था और उसे विशेष देखभाल की आवश्यकता थी, अखिला की सास को समझ आया, वो नर्स को बात मान गई, और जो आवश्यक था उसका पालन किया।

- आपके विचार से डॉक्टर ने अखिला की सास को क्या सलाह दी होगी?
- जन्म के समय बच्चे का वजन कम होने पर किन मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- बच्चे को कैसे गर्म रखना चाहिए?

नोट: यहां कोई जवाब न दें, बस सुनें कि समूह का क्या कहना है।

भारत नवजात शिशु कार्य योजना (आईएनएपी) का उद्देश्य नवजात मृत्यु दर और मृतजन्म को काफी कम करना और 2030 तक नवजात मृत्यु दर और मृतजन्म दर को "एकल अंक" तक लाना है। भारत में हर दिन 67,385 बच्चे पैदा होते हैं, जो दुनिया भर में जन्म लेने वाले बच्चों का छठा हिस्सा है। हर मिनट इनमें से एक नवजात की मौत हो जाती है। नवजात शिशु की देखभाल में कुछ सरल प्रथाओं का पालन करके इसे रोका जा सकता है

नवजात शिशु की देखभाल के संबंध में अपने परिवार में होने वाली चिंताओं और किसी भी अन्य मुद्दों पर अनुभव साझा करने के लिए कहें।

पूरी दुनिया में प्रतिवर्ष जन्म लेने वाले 20 मिलियन नवजात में से 8 मिलियन भारत में जन्म लेते हैं। नवजात शिशुओं की 80% से अधिक मौतें छोटे नवजातों में होती हैं- इन मौतों में समयपूर्व जन्म लेने वाले नवजातों का प्रतिशत 65% है जबकि कम गर्भकालीन आयु के कारण 19% मौतें होती हैं। भारत में कुल जीवित नवजातों में से लगभग 27% का जन्म के समय कम वजन (एलबीडब्ल्यू) होता है।

याद रखने के लिए कुछ तात्कालिक और आवश्यक नवजात देखभाल प्रथाएं हैं **बच्चे को तत्काल और पूरी तरह से पोंछ कर सूखा करना, त्वचा से त्वचा का संपर्क, गर्भनाल को देरी से काटना, और स्तनपान की जल्दी प्रारंभिक शुरुआत।**

नवजात के स्वस्थ जीवन की शुरुआत के लिए समूह को सूचित करें

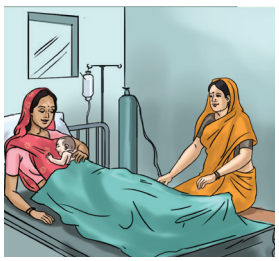

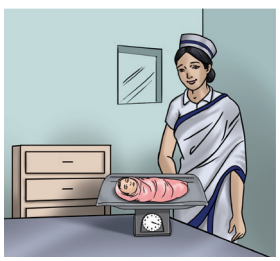

- जन्म के तुरंत बाद, बच्चे को माँ के स्तन के पास लिटा दिया जाना चाहिए ताकि बच्चा माँ के पहले पीले दूध- कोलोस्ट्रम को पी सके। स्तनपान की यह शुरुआत जन्म के बाद पहले घंटे के भीतर होनी चाहिए।
- जन्म के समय बच्चे का वजन 2.5 किग्रा से कम नहीं होना चाहिए, यह भी एक संकेतक है कि नवजात शिशु स्वस्थ है। यदि जन्म के समय 2.5 किग्रा से कम है, तो डॉक्टर से मार्गदर्शन मांगें। ऐसे बच्चों के लिए कुछ विशेष प्रयासों को शुरू करने की आवश्यकता है, जिनका उल्लेख बाद में इस सत्र में भी किया गया है।

तत्काल देखभाल प्रत्येक नवजात शिशु का मूल अधिकार है। इनमें नवजात को तत्काल सुखाना और उसके हाथ पैर आदि को रगड़ कर उसे उत्तेजना प्रदान करना, गर्मी का इंतजाम करना, स्वच्छ देखभाल, स्तनपान की प्रारंभिक शुरुआत, और विटामिन K देना, जैसे क्रियाकलाप शामिल हैं। जन्म के समय सांस नहीं लेने वाले बच्चों के लिए, नवजात पुनर्जीवन एक महत्वपूर्ण जीवनरक्षक क्रियाकलाप है। हाइपोथर्मिया नवजात मृत्यु दर के लिए एक जोखिम कारक है, खासकर अपरिपक्व और कम वजन वाले बच्चों के मामलों में। हाइपोथर्मिया को रोकने और प्रबंधित करने के लिए सभी कदम उठाए जाने चाहिए और कमरे में बच्चे के साथ मां को रहना चहिये। समय से पहले जन्मे शिशुओं सहित नवजात शिशुओं में देर तक गर्भ नाल को दबाए रखना एनीमिया और इंट्रावेंट्रिकुलर रक्तस्राव के कम जोखिम से जुड़ा हुआ है। जन्म के समय विटामिन K देना, नवजात शिशु के रक्तस्रावी रोग को रोकता है।

चरण 2:

सभी प्रतिभागियों को नवजात देखभाल पर अपनी समझ साझा करने के लिए कहें, और चर्चा के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालें।

नवजात शिशु की देखभाल के लिए याद रखने योग्य बातें

नवजात शिशु के स्वस्थ जीवन के लिए कुछ बातों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए

- नवजात को जन्म के 1 घंटे के भीतर मां का पहला पीला दूध पिलाना चाहिए।
- रात के समय भी नवजात को स्तनपान कराना आवश्यक है।
- बच्चे को जन्म से लेकर 6 महीने तक सिर्फ मां का दूध ही पिलाना चाहिए, यहां तक कि पानी की एक बूँद भी नहीं देनी चाहिए।
- नवजात के शरीर को गर्म रखना जरूरी है, इसलिए सिर और बच्चे के शरीर को हमेशा ढक कर रखना चाहिए।
- बच्चे को संभालने वाले और मां को बच्चे को छूने से पहले, नवजात को दूध पिलाने से पहले, नवजात के मल को साफ करने के बाद, साबुन से हाथ धोकर साफ़ करना चाहिए।
- नवजात को संक्रमण से बचाने के लिए जरूरी है कि उसके नाल पर कोई भी चीज न लगाएं।
- यदि नाभि पर या उसके आसपास कोई सूजन, रक्त, घाव या लाली दिखाई दे,तो बच्चे को तुरंत डॉक्टर को दिखाएं। गर्भनाल आमतौर पर सूख जाती है और पांच से दस दिनों में अपने आप गिर जाती है, इसे खींचने की कोशिश न करें।
- जन्म के तुरंत बाद बच्चे को न नहलाएं, बल्कि उसे धुले हुए सूती कपड़े से साफ़ करें, बच्चे को कब नहलाएं, इस बारे में डॉक्टर से सलाह लें।

चरण 3:

चित्र में दिखाए अनुसार नवजात शिशु को साफ कपड़ों से कैसे गर्म रखा जाए यह प्रदर्शित करने के लिए एक प्रतिभागी को शामिल करें जो एक युवा माँ या दादी हो सकती है।

बच्चों को गर्म रखने के लिए सही कदम

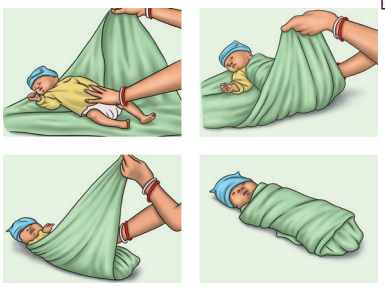

- बच्चे को लपेटने और गर्म रखने के लिए मां की साड़ी का एक टुकड़ा, साफ मुलायम तौलिया या कोई और कपड़ा चुनें।
- माताओं को चित्र में दिए अनुसार बच्चों को साफ कपड़े से लपेटना सिखाएं।

जन्म के समय कम वजन के शिशुओं की देखभाल

- कम जन्म वजन (लो बर्थ वेट-एल बी डब्लू) शिशुओं को उचित वृद्धि और विकास के लिए नवजात अवधि के दौरान सर्वोत्तम पोषण की आवश्यकता होती है। जन्म के समय कम वजन और बहुत कम वजन के शिशुओं को उचित आहार देने से उनके जीवित रहने की संभावना में सुधार होता है और यह उनके सर्वोत्तम वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। मां का दूध सभी शिशुओं के लिए आदर्श आहार है उनके लिए भी जिनका जन्म के समय वज़न कम होता है। डब्ल्यूएचओ अनुशंसा करता है कि सभी एलबीडब्ल्यू शिशुओं को, चाहे उनकी गर्भावधि कुछ भी हो, उन्हें स्तन का दूध पिलाया जाना चाहिए। इसका लक्ष्य हर एलबीडब्ल्यू शिशु को अपनी मां के स्तन से सीधे और विशेष रूप से जल्द से जल्द दूध पिलाने में सक्षम बनाना है।
- एलबीडब्ल्यू शिशु जो स्तनपान करने में सक्षम हैं, उन्हें जन्म के बाद जितनी जल्दी हो सके, जब वे चिकित्सकीय रूप से स्थिर हों, उन्हें स्तन में लगाया जाना चाहिए, और छह महीने की उम्र तक विशेष रूप से स्तनपान कराया जाना चाहिए।
- सभी गर्भकालीन उम्र के कम वजन शिशुओं के लिए मां का दूध सबसे अच्छा है। स्तन का दूध और विशेष रूप से कोलोस्ट्रम (गाढ़ा, पीला दूध जो प्रसव के बाद पहले कुछ दिनों के दौरान कम मात्रा में मां के स्तन से पैदा होता है) और कंगारू मदर केयर कम वजन वाले शिशुओं के अस्तित्व और कल्याण के लिए सबसे अच्छा है। मां के दूध को विशेष रूप से कम वजन शिशुओं की पोषण संबंधी जरूरतों के अनुकूल बनाया गया है; उदाहरण के लिए, समय से पहले एलबीडब्ल्यू शिशु को जन्म देने वाली माँ के स्तन के दूध में अतिरिक्त प्रोटीन होता है जो ऐसे शिशु के सामान्य विकास के लिए आवश्यक होता है।

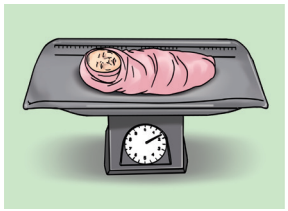

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि सभी कम वजन वाले नवजात शिशुओं को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है और ऐसे नवजात की देखभाल के बारे में माताओं के साथ-साथ परिवार के सदस्यों को पालन की जाने वाली विशिष्ट प्रथाओं के बारे में पता होना चाहिए।

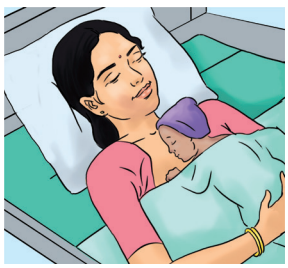

- यदि बच्चे का जन्म 2.5 किग्रा से कम वजन का होता है, तो उन्हें कम वजन कहा जाता है।
- ऐसे बच्चों को अधिक बार स्तनपान कराना चाहिए, खासकर रात में भी।
- अधिक बार स्तनपान कराने और उचित स्वच्छता बनाए रखने के साथ-साथ बच्चे को अधिक गर्मी और आराम प्रदान करने की आवश्यकता होती है।
- इन चरणों का पालन करके बच्चे को गर्मी प्रदान करना आसान है-
  - सबसे पहले मां को साफ कपड़े से अपने सीने और स्तनों को पोंछना चाहिए।
  - कमजोर बच्चों को टोपी, दस्ताने, मोजे और लंगोट से ढकें।
  - कम वजन वाले बच्चे को एक तरफ सिर करते हुए मां की छाती पर रखें।
  - ऐसा करने से कमज़ोर शिशु बेहतर ढंग से सांस ले पाएगा और भूख लगने पर दूध भी पी सकेगा।
  - माँ और शिशु दोनों को मौसम के अनुसार गर्म रखने के लिए कंबल से ढका जा सकता है।

अगर माँ अस्वस्थ है या किसी कारण से इन बातों का पालन करने की स्थिति में नहीं है तो बच्चे को गर्म रखने का यह अभ्यास पिता या परिवार के किसी अन्य सदस्य द्वारा किया जा सकता है। पिता को विशेष रूप से इन स्थितियों में सहयोग करना चाहिए।

चरण 4:

समूह द्वारा नवजात शिशु देखभाल पर प्रमुख संदेशों को समझने के बाद, समूह के सदस्यों से यह पूछकर टीकाकरण पर चर्चा शुरू करें कि वे ऐसा क्यों सोचते हैं कि टीकाकरण महत्वपूर्ण है और क्या उनके परिवार के सभी बच्चों को कार्यक्रम के अनुसार प्रतिरक्षित किया जा रहा है।

समूह को सूचित करें कि प्रतिरक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को आमतौर पर किसी वैक्सीन द्वारा किसी संक्रामक रोग से प्रतिरक्षित किया जाता है या रोग प्रतिरोधक बनाया जाता है। टीका व्यक्ति को बाद के संक्रमण या बीमारी से बचाने के लिए शरीर की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करते हैं। वे वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें कई बीमारियों से बचा सकते हैं। टीकाकरण न केवल बच्चों को घातक बीमारियों से बचाता है बल्कि बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को विकसित करने में भी मदद करता है। टीकाकरण के उपयोग के माध्यम से, कुछ संक्रमणों और बीमारियों को दुनिया भर में लगभग पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है।

इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे बच्चों के लिए निर्धारित टीकाकरण सारणी को पूरा किया जाए ताकि हम उन्हें कई घातक बीमारियों से बचा सकें।

टीकाकरण बच्चों को जानलेवा बीमारियों से बचाता है

- घातक बीमारियों से प्रभावित होने वाले बच्चों को बचाने के लिए नियमित टीकाकरण एक सुरक्षित, सस्ता और प्रभावी तरीका है।
- टीका लगवाने से घातक बीमारियों से ग्रस्त हो रहे बच्चों की रक्षा होती है।

बच्चों के लिए घातक रोग निम्नलिखित हैं:

- टिटनस
- पोलियो
- मीज़ल्स या खसरा
- हेपेटाइटिस बी
- निमोनिया, टीबी, काला फंगस आदि सहित श्वसन संबंधी रोग

उपरोक्त बीमारियों और टीकाकरण के बारे में अधिक जानने और समझने के लिए, आशा और एएनएम दीदी से संपर्क करें।

बच्चों को जन्म से लेकर 5 साल तक के कार्यक्रम के अनुसार पूरी तरह से प्रतिरक्षित किया जाना चाहिए

- बच्चों का जन्म से लेकर 5 साल तक टीकाकरण करवाना चाहिए, बिना किसी खुराक को छोड़े, सारणी/अनुसूची का पालन करते हुए।
- प्रतिरक्षण एवं अन्य सेवाओं की व्यवस्था आंगनबाडी केन्द्रों में माह में एक बार वीएचएसएनडी दिवस पर की जाती है।

- प्रतिरक्षण कार्ड प्राप्त करने के लिए एएनएम या आशा के पास पंजीकरण कराएं।
- टीकाकरण की पूरी सारणी/अनुसूची का पालन करने के लिए एक कार्ड दिया जाता है जिसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

नीचे दी गई तालिका में उन कार्यक्रमों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत नवजात स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं

कार्यक्रम	उद्देश्य
जननी सुरक्षा योजना (जे एस वाय)	डिमांड साइड फाइनेंसिंग और कंडीशनल ट्रांसफर के माध्यम से संस्थागत प्रसव को बढ़ाने के लिए सुरक्षित मातृत्व क्रियाकलाप
सामुदायिक स्तर पर नवजात और बचपन की बीमारियों का एकीकृत प्रबंधन (आईएमएनसीआई) और स्वास्थ्य सुविधाओं में एफ-आईएमएनसीआई	नवजात और बचपन की रुग्णता और मृत्यु दर के प्रमुख कारणों का स्टैण्डर्ड केस मैनेजमेंट
नवजात शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (एनएसएसके)	बुनियादी नवजात देखभाल और पुनर्जीवन प्रशिक्षण कार्यक्रम
जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (जे एस एस के)	निःशुल्क स्वास्थ्य देखभाल और रेफरल परिवहन पात्रता के माध्यम से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अपनी जेब से शून्य व्यय
सुविधा आधारित नवजात देखभाल (एफबीएनसी)	जन स्वास्थ्य सेवाओं के विभिन्न स्तरों पर नवजात देखभाल सुविधाएं जिनमें तत्काल देखभाल प्रदान करने के लिए बच्चे के जन्म के सभी बिंदुओं पर नवजात देखभाल कॉर्नर (एनबीसीसी) शामिल हैं; चयनित स्थितियों के प्रबंधन के लिए सीएचसी/एफआरयू में नवजात स्थिरीकरण इकाइयां (एनबीएसयू) और उच्च केंद्रों के लिए रेफरल से पहले बीमार नवजात शिशुओं को स्थिर करने के लिए; और बीमार नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए जिला/उप-जिला अस्पतालों में विशेष नवजात देखभाल इकाइयां (एसएनसीयू) (वेंटिलेशन और प्रमुख सर्जरी को छोड़कर सभी प्रकार की देखभाल)
घर पर नवजात शिशु की देखभाल	सभी नवजात शिशुओं के लिए आवश्यक नवजात शिशु देखभाल का प्रावधान, समय से पहले और जन्म के समय कम वजन वाले नवजात शिशुओं की विशेष देखभाल; रेफरल के बाद बीमारी का जल्दी पता लगाना; और आशा कार्यकर्ता द्वारा स्वस्थ प्रथाओं को अपनाने के लिए परिवार को सहयोग करना
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके)	जन्म दोष, बीमारियों, कमियों और विकासात्मक देरी (विकलांगता सहित) वाले बच्चों की जांच

स्वयं सहायता समूह की भूमिका

- समूह के सदस्यों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गर्भवती महिलाओं और परिवार के अन्य सदस्यों के पास पर्याप्त जानकारी है और उन्हें पता है कि नवजात शिशु की देखभाल से संबंधित क्या किया जाना चाहिए।
- यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पुरुषों, विशेष रूप से नई माताओं के पतियों को यह पता हो कि नवजात का पूरा टीकाकरण हो गया है और नवजात शिशु की देखभाल के बारे में उन्हें सभी जानकारी हो।
- समूह को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नवजात शिशु की देखभाल के संबंध में आशा/अन्य स्वास्थ्य प्रदाताओं द्वारा गृह भ्रमण के दौरान आवश्यक जानकारी प्रदान की जाती है।
- समूह के सदस्यों को सहयोग करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यदि परिवार में या आसपास कोई कमजोर या बीमार नवजात है, तो बच्चे को डॉक्टर या नर्स से तुरंत मदद मिले।

नोट: स्वयं सहायता समूह को उन सदस्यों का सहयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो समस्याओं का सामना करते हैं या इन संदेशों को व्यक्त करने और अपने परिवारों को समझाने में मुश्किल पाते हैं।

सत्र का समापन: केस स्टडी के प्रश्नों और उनके उत्तरों पर फिर से विचार करके सत्र समाप्त करें। प्रतिभागियों को धन्यवाद दें और सत्र समापन की घोषणा करें।

खाद्य, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता (FNHW) टूलकिट को राष्ट्रीय मिशन प्रबंधन इकाई (NMMU) द्वारा तकनीकी सहायता एजेंसी, TA-NRLM, प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल (PCI) के सहयोग से विकसित किया गया है तथा रोशनी-सेंटर ऑफ वूमेन कलेक्टिव्स लेड सोशल एक्शन, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (NIRD), राज्य ग्रामीण विकास संस्थानों (SIRDs), नेशनल रिसोर्स पर्सन्स (NRPs), बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों (SRLMs), जीविका तकनीकी सहायता कार्यक्रम-प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल (JTSP-PCI) और ओडिशा, बिहार और छत्तीसगढ़ राज्यों की यूनिसेफ टीमों से सुझाव प्राप्त किये गए हैं।

सामग्री को अंतिम रूप देने हेतु, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW), महिला और बाल विकास मंत्रालय (MoWCD), नेशनल सेंटर फॉर एक्सीलेंस एंड एडवांस्ड रिसर्च ऑन डाइट्स (NCEARD), अलाइव एंड थ्राइव (A&T), JTSP-PCI और UNICEF की मानक सामग्री को संदर्भित किया गया है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्राम आजीविका मिशन (डी ऐ वाई - एनआरएलएम)
ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

7 वीं मंज़िल, एनडीसीसी बिल्डिंग-II, जय सिंह रोड, नई दिल्ली–110001

वेबसाइट: www.aajeevika.gov.in

सत्यमेव जयते
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

आजीविका AAJEEVIKA